



श्री तुलसी प्रणाम

वृन्दायै तुलसी देव्यायै, प्रियायै केशवस्यच
कृष्ण भक्ती प्रदे देवी, सत्य वत्यै नमो नमः ॥

तुलसी आरती

नमो नमः तुलसी कृष्ण-प्रेयसी नमो नमः
राधा-कृष्ण-सेवा पाबो एइ अभिलाशी ॥ 1 ॥

ये तोमार शरण लोय, तारा वांछा पूर्ण होय
कृपा करी कोरो तारे वृन्दावन वासीं ॥ 2 ॥

मोर एई अभिलाष विलास कुंजे दियो वास
नयन हेरीबो सदा युगल रूप राशि ॥ 3 ॥

एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कोरो
सेवा अधिकार दिये कोरो निज दासी ॥ 4 ॥

दिन कृष्ण दासे कोय, एइ येन मोरा होय
श्री राधा गोविंद प्रेमे सदा येन भासिं ॥ 5 ॥

श्री तुलसी प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानी, ब्रह्म हत्यदिकानी च
तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणः पदे पदे ॥